परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था , मुंबई

कक्षा-छठवीं

विषय-संस्कृत **पुस्तक-रुचिरा**

शीर्षक-शब्दरूपाणि-(बालक,बालिका) **मॉड्यूल-1/1**

श्रीमती प्रतिभा रोकड़े (परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-3 तारापुर)

सामान्य परिचय

शब्दरूप: वाक्य की सबसे छोटी इकाई को शब्द कहते हैं। शब्दों के अनेक रूप (संज्ञा, सर्वनाम, आदि) होते हैं। संस्कृत भाषा में प्रयोग करने के लिए पद बनाया जाता है। संज्ञा, सर्वनाम आदि शब्दों को पद बनाने हेतु इनमें प्रथमा,द्वितीया आदि विभक्तियाँ लगाई जाती हैं। इन शब्दरूपों (पदों) का प्रयोग पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग तथा एकवचन,द्विवचन और बहुवचन में भिन्न-भिन्न रूपों में होता है। इन्हें सामान्यतया शब्दरूप कहा जाता है।

विभक्ति: विभक्ति का शाब्दिक अर्थ है - ' विभक्त होने की क्रिया या भाव' या 'विभाग' या 'बाँट'।

व्याकरण में शब्द (संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण) के आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या चिह्न विभक्ति कहलाता है जिससे पता लगता है कि उस शब्द का क्रियापद से क्या संबंध है।

संस्कृत व्याकरण के अनुसार नाम या संज्ञाशब्दों के बाद लगनेवाले वे प्रत्यय 'विभक्ति' कहलाते हैं जो नाम या संज्ञा शब्दों को पद (वाक्य प्रयोगार्थ) बनाते हैं और कारक परिणति के द्वारा क्रिया के साथ संबंध सूचित करते हैं। प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, और सप्तमी ये सात विभक्तियाँ हैं जिनमें एकवचन , द्विवचन और वहुवचन — ये तीन वचन होते है।

अकारांत: अकारांत शब्द वे होते हैं, जिनके अंत में 'अ' आता है। यथा- बालक, छात्र, राम, वृद्ध, अध्यापक आदि।

आकारांत: आकारांत शब्द वे होते हैं, जिनके अंत में 'आ' आता है। यथा- बालिका, छात्रा, लता, वृद्धा, अध्यापिका, वाटिका आदि।

****